की परिभाषा का प्रकार है —
निर्देशन वह प्रक्रिया है जो व्यक्ति को अपनी आवश्यकताओं, योग्यताओं एवं साधनों के साथ-साथ अपनी दुर्बलताओं के अनुसार तथा अपनी भावी जीवन को बनाने तथा समाज के अभियोजित होने में सहायता करती।"

"Guidance is a process of helping a person to understand his needs, abilities, resources as well as his deficiencies and accordingly to prepare for his future life and to fit him in his society."

परिभाषा में निम्नलिखित बातें महत्वपूर्ण हैं —

निर्देशन एक सहायक प्रक्रिया (helping process) है।
निर्देशन से व्यक्ति को अपने गुणों तथा अवगुणों को समझने में सहायता मिलती है। गुणों का तात्पर्य व्यक्ति की योग्यताओं तथा क्षमताओं से है और अवगुणों का अर्थ उसकी दुर्बलताओं तथा कमियों से है। निर्देशन एक ऐसी परिस्थिति उत्पन्न करता है जिसमें व्यक्ति अपनी व्यक्तित्व रूपरेखा को समझने में समर्थ हो पाता है।
निर्देशन से व्यक्ति को न केवल अपने गुणों तथा अवगुणों को समझने में सहायता मिलती है बल्कि अपने भावी जीवन की तैयारी में भी सहायता मिलती है।
यह प्रक्रिया व्यक्ति को समाज में अभियोजित होने में सहायता करती है। समाज में अभियोजित होने का अर्थ यह है कि व्यक्ति समाज के लिए कल्याणकारी प्रमाणित हो।

निर्देशन के प्रकार (Kinds of Guidance)

शैक्षिक निर्देशन (Educational Guidance)
व्यावसायिक निर्देशन (Vocational Guidance)
व्यक्तिगत निर्देशन (Personal Guidance)

① शैक्षिक निर्देशन (Educational guidance) :—

शिक्षा के सम्बन्ध में विद्यार्थियों को जो निर्देशन दिया जाता है उसे शिक्षा निर्देशन कहते हैं। बुद्धि, अभिरुचि, रुझान तथा स्वभाव की दृष्टि से सभी बालक एक दूसरे से भिन्न होते हैं। इसी तरह विभिन्न शिक्षणों के लिए विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण, योग्यता, रुचि इत्यादि की आवश्यकता होती है। अतः किसी विषय का शिक्षण तभी सफल एवं प्रभावशाली हो सकता है जबकि वह बालक की योग्यता, आवश्यकता, रुचि आदि के अनुकूल हो। विद्यार्थी इस तथ्य को समझने में असमर्थ होता है। अभिभावक तथा शिक्षक भी या तो इस तथ्य को नहीं समझ पाते हैं या जानबूझ कर इससे मुँह मोड़ लेते हैं। फलतः विद्यार्थी अपनी साथियों की देखा-देखी अथवा अभिभावक की इच्छा के अनुसार किसी विषय को चुन लेता है और लम्बे परिश्रम के बाद भी असफल घोषित होता रहता है। ऐसी अवस्था में निर्देशन की आवश्यकता होती है जो विद्यार्थी की अपनी योग्यताओं तथा आवश्यकताओं को समझने तथा अपने इच्छानुसार विषय को चुनने में सहायता करता है।

वैयक्तिक भिन्नताएँ (Individual differences) व्यक्ति और व्यक्ति के बीच ही नहीं होती बल्कि एक ही व्यक्ति की विभिन्न योग्यताओं के बीच भी होती है। इस प्रकार बालक की सभी योग्यताएँ समान मात्रा में नहीं होती। एक या दो क्षेत्रों में वह प्रतिभाशाली हो सकता है। परन्तु अधिकांश क्षेत्रों में वह सामान्य ही होता है। अतः निर्देशन बालक की अपनी इस विशिष्ट योग्यता या क्षेत्र की खोज करने तथा इसके अनुसार शिक्षा की व्यवस्था करने में भी मदद करता है।

निर्देशन : शिक्षा-निर्देशन में इन सब बातों को ध्यान में रखकर Educational Guidance के समुचित परिभाषा इस प्रकार दी :—

"शैक्षिक-निर्देशन वह प्रक्रिया है जो विद्यार्थी को अपनी मानसिक शक्तियों को समझने, अपने विशिष्ट मेधा एवं प्रवृत्तियों का अन्वेषण करने, तदनुसार शिक्षा संबंधी चुनाव करने तथा उसके साथ अनुकूल करने में सहायता करती है।"

"Educational guidance is a process of helping a pubil to understand his abilities, to explor his special talents and tendencies, to ascertain his right educational choice and to adjust himself to the

इस परिभाषा में निम्नलिखित बातें गुरुत्व हैं —

(i) शैक्षिक निर्देशन शिक्षा संबंधी एक सहायता है। इसके द्वारा शिक्षार्थी को पाठ्यक्रम या शिक्षा सम्बन्धी अन्य क्रियाओं के चुनाव में मदद मिलती है।

(ii) निर्देशन शिक्षार्थी को अपनी विभिन्न मानसिक शक्तियों को समझने में सहायता करता है। "वैयक्तिक भिन्नता सिद्धांत" (Theory of individual differences) से प्रमाणित हो चुका है कि हर शिक्षार्थी की बुद्धि, आवश्यकता तथा अन्य मानसिक शक्तियाँ दूसरे से भिन्न होती है। इस तथ्य की जानकारी दिलाने में निर्देशन शिक्षार्थी की इस समय सहायता करता है।

(iii) निर्देशन शिक्षार्थी को अपने विशिष्ट गुण तथा रुझान का अन्वेषण करने में भी सहायक होता है। मानसिक शक्तियाँ या योग्यताएँ विभिन्न हैं, परन्तु इन सब की मात्रा समान नहीं होती। अतः निर्देशन शिक्षार्थी को अपने उस गुण की खोज करने में मदद करता है जो उसके अपने ही गुणों में सबसे अधिक या असाधारण होता है।

(iv) निर्देशन शिक्षार्थी को अपनी सामान्य मानसिक शक्ति, विशिष्ट असाधारण गुण, आवश्यकता तथा अभिरुचि के अनुकूल शैक्षिक विषय को चुनने में सहायता करता है। शिक्षार्थी में इतनी सामर्थ्य नहीं होती कि वह स्वयं इस काम को कर सके। अतः निर्देशन एक ओर उसकी अपनी सामान्य एवं विशिष्ट योग्यताओं को समझने में तथा दूसरी ओर अनुकूल विषय के चयन में इसकी सहायता करता है।

(v) निर्देशन-प्रक्रिया तब तक जारी रहती है जब तक कि शिक्षार्थी अपने शैक्षिक चुनाव के साथ अनुकूलन करके अपने तथा समाज के लिए उपयोगी प्रमाणित न हो जाए। कभी-कभी शिक्षा के विषय का गलत चुनाव हो जाने से शिक्षार्थी उसके साथ अभियोजित नहीं हो पाता है। ऐसी स्थिति में निर्देशक शिक्षार्थी की फिर से आत्म मूल्यांकन करके तथा तदनुसार शैक्षिक-चुनाव में संशोधन करके उसके साथ अनुकूलन स्थापित करने में मदद

(2) व्यावसायिक निर्देशन (Vocational guidance) —

व्यवसाय के क्षेत्र में जब निर्देशन का व्यवहार किया जाता है तो इसे व्यावसायिक निर्देशन कहते हैं। यह एक वास्तविकता है कि न तो हर काम के लिए हर व्यक्ति योग्य होता है और न हर व्यक्ति के लिए हर काम उपयुक्त होता है। जरूरत यह है कि हर व्यक्ति शारीरिक एवं मानसिक क्षमताओं में एक दूसरे से भिन्न होता है और इसी तरह हर काम के लिए विभिन्न योग्यताओं की आवश्यकता विभिन्न मात्रा में होती है। अतः कार्य संतुष्टि (Job satisfaction) के लिए उचित व्यक्ति के लिए उचित कार्य आवश्यक है। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए निर्देशन का उपयोग व्यवसाय के क्षेत्र में किया जाता है। अतएव, निर्देशन प्रक्रिया उचित व्यक्ति के लिए उचित कार्य के चुनाव में सहायता होती है।"

अतः "व्यावसायिक निर्देशन वह प्रक्रिया है जो व्यक्ति को उचित व्यवसाय के चयन तथा प्रगति में इसके गुणों तथा व्यावसायिक सुविधा को ध्यान में रखते हुए सहायता करती है।"

व्यावसायिक निर्देशन का प्रारम्भ उसी समय हो जाता है जबकि बालक स्कूल तथा कॉलेज में दाखिल होकर विभिन्न विषयों का चुनाव अपनी योग्यता, आवश्यकता, अभिरुचि तथा उपलब्ध साधनों के अनुकूल करने लगते हैं। इसीलिए व्यावसायिक निर्देशन ~~के व्यावसायिक~~ को शिक्षा का एक आवश्यक अंग माना जाता है। इस दृष्टि से शैक्षिक-निर्देशन में व्यावसायिक निर्देशन भी निहित होता है।

व्यक्तिगत निर्देशन (Personal guidance) :—

व्यक्तिगत निर्देशन का तात्पर्य उस प्रक्रिया से है जो व्यक्ति को वैयक्तिक समस्याओं के समाधान में सहायक होती है। निर्देशन (~~Guide~~) व्यक्ति की समस्याओं का समाधान नहीं करता बल्कि उसे अपनी समस्याओं को समझने तथा समाधान करने में मात्र सहायता करता है। वह ऐसा वातावरण उत्पन्न कर देता है कि व्यक्ति अपनी योग्यताओं एवं उपलब्ध साधनों और वाह्य परिस्थिति की कठिनाइयों एवं सुविधाओं के बीच एकरूपता स्थापित करने तथा समायोजित होने में समर्थ हो पाता है।